'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १२३ | वाराणसी, मंगलवार, २७ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

सुलानपुर (पंजाब) २१-९-'५९

क्रान्ति के लिए विचार और प्यार की ताकत बढ़ायें

आज सुबह से यहाँ जो प्रेम का दर्शन हो रहा है, उसका दिल पर बहुत असर होता है। मैं जहाँ-जहाँ जाता हूँ, वहाँ-वहाँ मुझे लगता है कि इस सूबे के लोगों में कितना प्रेम है। लेकिन जब मैं वह सूबा छोड़कर दूसरे सूबे में जाता हूँ तो फिर वैसा ही प्रेम दीख पड़ता है। इसलिए मैं कह नहीं सकता कि किस प्रदेश में ज्यादा प्रेम मिलता है।

शान्ति की शक्ति बढ़ रही है

सारा भारत ही प्रेम से भरा हुआ है। यह देखकर बहुत खुशी होती है और ईश्वर पर श्रद्धा बढ़ती है कि हिन्दुस्तान के लोगों में इतना प्रेम उमड़ रहा है। उधर अखबारों की दुनिया में आप देखेंगे कि पन्ने-पन्ने पर द्वेष उमड़ रहा है। खून, हमले, डाके, लूट, खसोट, नाजायज कब्जे वगैरह हो रहे हैं। लेकिन इस हालत में भी अभी रूस और अमेरिका के बड़े नेता मिल रहे हैं। ऐसे नेता कि जिनके हाथ में कुल दुनिया को खत्म करने की ताकत है। दोनों के पास ऐसे हथियार मौजूद हैं कि वे घर बैठे-बैठे दुनिया को खत्म कर सकते हैं। जिनके हाथ में ऐसी ताकतें हैं, वे आज एक दूसरे से हाथ मिलाकर प्रेम की बातें कर रहे हैं। ख्रुश्चेव ने यहाँ तक कह दिया है कि सारी आर्मी, नेवी, एयरफोर्स वगैरह खत्म कर दिये जायँ। जब वे खत्म होंगे, तभी दुनिया में शान्ति होगी और आज जो हम फौज पर खरचा करते हैं, वह सारा लोगों की खिदमत में सर्फ होगा। रूस इस तरह करने के लिए तैयार है ऐसा ख्रुश्चेव बोल रहे हैं। उनका यह कहना कुछ अजीब सा लगता है!

> विचार से मालूम होता है कि क्या करना चाहिए और प्यार से मालूम होता है कि किस ढंग से करना चाहिए। इसलिए हम इस अभिनव क्रान्ति के लिए विचार और प्यार की ताकत बढ़ायें।

अभी जो फौज और फौजी ताकत बढ़ाते चले जा रहे हैं, उनका भी दिल कहता है कि अब इन हथियारों से कुछ नहीं बनेगा। इसलिए आज अखबारों की दुनिया में लड़ाई, झगड़े की खबरें आती रहती हैं, उसके बावजूद दुनिया में शान्ति की शक्तियाँ बढ़ती जा रही हैं, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।

हम दान माँगने जाते हैं, टैक्स वसूलने नहीं

अभी मैं कश्मीर होकर आया हूँ। इसके पहले मैंने कभी कश्मीर में कदम नहीं रखा था। न मैं काश्मीर के बारे में कुछ जानता ही था। वहाँकी सरकार ने २२ एकड़ का सीलिंग बनाया है। उससे ज्यादा जमीन जिसके पास थी, उसे लेकर सरकार ने मुजारों में बाँट दी है। वह काम मुकम्मिल, पूरा हो गया है। लेकिन वहाँ जाने पर मैंने देखा कि सीलिंग के बाद भी लोगों ने मुझपर जमीन की वर्षा की। वहाँ मैंने छठे हिस्से का आग्रह नहीं रखा। मैंने कहा कि सीलिंग बना है। इसलिए जो भी देना हो दीजिये। लोगों ने छठे हिस्से से बहुत ज्यादा दिया। कुछ लोगों ने आधी जमीन भी दी। मैंने छठे हिस्से का आग्रह नहीं रखा था। इसलिये उन्हें कम देने का हक ही था। मैं चाहता था कि प्रेम बढ़े। यहाँ भी मैं वही बात कहना चाहता हूँ कि हम दान माँगने जाते हैं, टैक्स वसूल करने के लिये नहीं, इसलिए हम चाहते हैं कि लोगों के दिल में छिपा हुआ प्यार प्रगट हो और उसकी ताकत बने। घर में बिजली आयी है, लेकिन बटन नहीं दबाया तो रोशनी प्रगट नहीं होती है। बटन दबाने की तरकीब मालूम न हो तो बिजली मौजूद होने पर भी अन्धेरे में ही रहना पड़ता है। हर शख्स में प्रेम है। हिन्दुस्तान में ऐसा एक भी शख्स नहीं है, मैं तो मानता हूँ कि दुनिया भर में भी नहीं है जिसके हृदय में प्रेम की बिजली न हो। इस तरह बिजली घर में आ चुकी है। लेकिन बटन दबाना बाकी है। कहीं बल्ब छोटा हो तो कम प्रकाश मिलेगा और बड़ा हो तो ज्यादा मिलेगा। लेकिन मैं चाहता हूँ कि एकदफा प्रेम प्रकट हो। इसलिए मैं छठे हिस्से का आग्रह रखना नहीं चाहता हूँ। बल्कि यह कहना चाहता हूँ कि आप देना शुरू करें।

मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है विश्वास, विश्वास के आधार पर ही हमारा सारा कारोबार चलता है। हमें सब पर एतबार, विश्वास रखना चाहिए कि एकदफा दिल के दरवाजे खुल गये तो

www.vinoba.in

फिर प्रेम बाहर आने लगेगा। आज एक छोटा-सा झरना दीखता है। कल उसका नाला बनेगा, परसों नदी बनेगी और आखिर वह समुद्र में मिल जायगी।

लोग बुद्धू नहीं हैं

मैं जानता था कि सरकार ने कानून बनाकर जमीन छीन ली तो लोगों ने आपस में रिश्तेदारों में पहले ही जमीन बाँट ली होगी और फिर बची हुई सरकार के पास पहुँची होगी। जब मुझसे पूछा गया कि सरकार ने बिना मुआवजे के जमीन छीन ली और बाँट दी तो इसके बारे में आपकी क्या राय है? मैंने जवाब दिया कि कश्मीर में मैंने जो देखा, उससे मुझे दो खुशियाँ हुई। पहली खुशी यह कि सरकार ने बिना मुआवजे के कानूनी हद बाँधकर जमीन ले ली और गरीबों में बाँट दी। दूसरी खुशी यह हुई कि लोग बेवकूफ साबित नहीं हुए और उन्होंने पहले से ही अपने रिश्तेदारों में काफी जमीन बाँट ली। अगर दूसरी बात उन्होंने न की होती याने लोग सरकार को जमीन छीनने देते तो हिंदुस्तान की तरक्की के बारे में मैं मायूस हो जाता। मुझे लगता कि हिंदुस्तान के लोग बुद्धू हैं, लेकिन जब मैंने देखा कि लोगों ने जमीन छीनने नहीं दी, साठ, सत्तर फी सदी आपस में बाँट दी तो मुझे खुशी हुई।

कश्मीर का उल्लेखनीय कार्य

कश्मीर में मैंने बहुत प्रेम देखा, वहाँ शांति-सेना में तो इतने लोग शामिल हुए कि खुद मुझे ही आश्चर्य हुआ। मैं सोचने लगा कि क्या मैं सपना देख रहा हूँ या जागती हुई दुनिया देख रहा हूँ। जगह-जगह कई भाई, बहनों ने शांति-सेना में नाम दिये। मैंने लोगों को ज्यादा बातें नहीं कहीं। सिर्फ दो बातें समझायी कि शांति-सेना में जो शख्स नाम देगा, वह किसीको मारेगा नहीं, किन्तु समय पर मार खाने के लिए तैयार रहेगा। वह किसी प्रकार का जातिभेद, धर्मभेद नहीं रखेगा। ये दोनों बातें ऐसी थीं कि लोग अगर जरा भी सोचनेवाले होते तो उन्हें—ये बातें—आसान नहीं थीं, इसलिए खूब सोचने के लिए मजबूर करतीं। यहाँपर जिन्होंने फौज में काम किया और महावीर-चक्र हासिल किया है, ऐसे जनरल यदुनाथ सिंहजी ने शांति-सेना में नाम दिया और कर्नल हीरानंद ने शांति-सेना में नाम दिया। हीरानन्दजी ने फौज में बहुत बहादुरी से काम किया है। फौज के काम में ही जिनकी एक आँख भी गयी। उन्हें भी वीरचक्र मिला है। मैंने कहा था कि जब फौजी आदमी शांति-सेना में नाम देता है तो वह सच्चा शांति-सैनिक बन सकता है। क्योंकि गांधीजी ने कहा था कि अहिंसा दुर्बलों की नहीं, बल्कि बलवानों की प्रकट होनी चाहिए, तभी सच्ची अहिंसा होगी। कश्मीर में यह सब हुआ।

मैं कार्यकर्ताओं से कहना चाहता हूँ कि यहाँ पर आप ग्रामदान की बात करेंगे तो क्या भूदान नहीं लेंगे? और उसमें भी कोई छठे हिस्से से कम देता है तो क्या वह नहीं लेंगे? हमें समझना चाहिए कि न्याय देना हमारा काम नहीं है, प्यार करना हमारा काम है। एक दफा प्यार खुल जाय तो फिर आप देखेंगे कि आगे क्या होता है। सियासत में जो काम चलते हैं, वे दिलों को तोड़नेवाले होते हैं। पंजाब में वैसे काम नहीं चलेंगे, क्योंकि यहाँके लोग दस हजार साल से लड़ाइयाँ देख चुके हैं, इसलिए इनके दिमाग शांत ही रहनेवाले हैं। यहाँके लोगों के पूर्वज आर्य थे, यहाँके लोग बहुत अनुभवी हैं। इसलिए मेरा विश्वास है कि यहाँपर प्रेम प्रकट करने का मौका दिया जाय तो खूब काम होगा।

हद दर्जे की नासमझी

मैंने गुरुद्वारे के मामले में कहा था कि आज उसमें जो झगड़े चल रहे हैं, यह एक बिलकुल ही नासमझी हो रही है। उसमें सिख धर्म को और भारत को भी खतरा है, सियासत में अक्सरियत, (बहुमत) और अकलियत (अल्पमत) के सवाल से झगड़े पैदा हो रहे है। वह चीज धर्म में भी होने लगी है, यह कितनी खतरनाक बात है। मैंने बार-बार इन सियासतदाँ से कहा है कि आपको इस समय जो पक्षीय राजनीति चली है, उसे छोड़कर पक्षमुक्त तरीके ढूँढने होंगे। आज की अक्सरियत, अकलियतवाली सियासत से हिंदुस्तान का नुकसान हो रहा है। वही चीज जब धर्म में दाखिल होती है तो हद दर्जे की नासमझी होगी, इससे ज्यादा नासमझी का मैं खयाल ही नहीं कर सकता। क्या धर्म के फैसले अक्सरियत से हो सकते हैं? गुरु नानक के मन में धर्म स्फूर्त हुआ और फिर वह विचार आगे बढ़ा। चाहे सिख धर्म का नाम कोई पसंद करे या न करे, लेकिन सिखों का जो बुनियादी विचार है, वह है - कुल दुनिया एक कौम, एक जमात है, वह एक बहुत बड़ी बात है, जिसमें फिरके, जाति-भेद नहीं हैं, मूर्तिपूजा का ज्यादा आग्रह नहीं है, खंडन भी नहीं है, परमात्मा एक है—यही कहा है। यह जो मूल विचार है, वह दुनिया में फैलनेवाला है, लेकिन जिस जमात ने दुनिया को यह विचार दिया, उसी जमात के अन्दर आज सियासी हथकंडे दाखिल हो रहे हैं! मजहब में सियासत का दाखिल होना बहुत ही खतरनाक है, इस बारे में मैं सबको आगाह करना चाहता हूँ। अगर मेरी चले तो मैं कहूँगा कि गुरुद्वारे में जाते समय सियासत के जूते बाहर रखकर जाना होगा। सियासत की कीमत जूते से ज्यादा नहीं है। आज देश में जिस किस्म की सियासत चल रही है, वह सिर पर उठाने की चीज नहीं है। ज्यादा से ज्यादा पाव में रखने की चीज हो सकती है, इसलिए वह चीज लेकर गुरुद्वारे में, चर्च में, मंदिर में या मस्जिद में मत जाओ, वहाँ अगर उसे ले जाओगे तो भगवान का घर शैतान का घर बनेगा।

मैंने कश्मीर में कई दफा कहा है कि हम सब धर्मवालों को इकट्ठा होकर परमात्मा का ध्यान करना चाहिए, अपने छोटे-छोटे मतभेदों को खत्म करना चाहिए, सामाजिक और आर्थिक मैदान में ऊँच-नीचता खत्म करनी चाहिए। जाति-भेद, धर्म-भेदों को भी खत्म करना है, ऊँच-नीचता को मिटाने का काम है और यह सब प्यार और विचार के जरिये करना है। विचार से चीज समझ में आती है और प्यार से उसपर ठीक अमल होता है। इसलिए विचार और प्यार से क्रान्ति होती है। विचार से मालूम होता है कि क्या करना चाहिए और प्यार से मालूम होता है कि किस ढंग से करना चाहिए। दुनिया में जो भी क्रान्तियाँ हुई हैं, विचार और प्यार से ही हुई। इसलिए विचार और प्यार हमें बढ़ाना चाहिए।

अबला को सबला बनाने का उपाय

मेरा मानना है कि पंजाब और किसीकी कुछ भी नहीं सुनेगा लेकिन मेरी यह बात सुनेगा। क्योंकि मैं जो बता रहा हूँ, वह सही है, वह यहाँकी सभ्यता का परिणाम है और साइंस भी यह बात कह रहा है। अब अगर ऊँच-नीचता आदि सारे भेद कायम रहे तो साइन्स से फायदा होने के बदले नुकसान ही होनेवाला है। इसलिए मेरा विश्वास है कि पंजाब के लोग

www.vinoba.in

मेरी बात कबूल करेंगे। कश्मीर में शान्ति-सेना में सैकड़ों नाम मिले तो पंजाब में क्यों नहीं मिलेंगे। यहाँपर इतनी बहनें बैठी हैं, उनका नाम शान्ति के सिवाय कैसे बनेगा? अगर दुनिया में अशांति की ताकत बढ़ी तो बहनें हमेशा कमजोर ही रहेंगी। इसलिए बहनों का यह मुख्य काम है कि अशान्ति को रोकें, जहाँ भी दंगा फसाद हो वहाँ बहनें जायँ और बीच में खड़ी होकर कहें कि भाइयो, समझदारी से काम करो। इस तरह प्यार से समझाने पर भी कोई बात न माने तो वे सिर फुड़वाने के लिए तैयार रहें। मुझे उम्मीद है कि यहाँ भी बहनें बड़ी तादात में शांतिसेना में नाम देंगी। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

डीगडोल (जम्मू-कश्मीर) २६-८-'५९

कृष्ण जयन्ती मनाने का सही तरीका?

[आज का पड़ाव एक ऐसी घाटी में था, जहाँ सिर्फ एक 'इंस-पेक्शन बंगलाँ' था। आस-पास में और कोई बस्ती नहीं थी। दूर-दूर से लोग पू० बाबा का प्रवचन सुनने आये। उन्हें सम्बोधित करते हुए बाबा ने कहना आरंभ किया।]

हम अभी आपके चेहरे देख रहे थे। बड़े खुशमिजाज चेहरे हैं। हम यह भी गिन रहे थे कि आप कितने लोग हैं। करीब एक सौ। छोटी-सी मजलीस है। यही ऐसी छोटी मजलीस में बात करने में बहुत खुशी होती है।

गाँववालों की हालत

अभी हम जंगल, पहाड़ की तरफ से आ रहे हैं। रास्ते में हम देख रहे थे कि ऊँचे-ऊँचे पहाड़ पर दूर-दूर घर हैं। एक घर इधर, एक घर उधर। आप बिलकुल खलवन में रहते हैं। एकान्त में, खलवन में शान्ति रहती है। आपकी हालत को देखकर हमारा एक साथी कहने लगा कि इन लोगों का जीवन इतना अच्छा है कि ये योगी बन सकते हैं। इनको कोई झगड़ा या परेशानी नहीं है। ये प्यार से रहते हैं। खेतों मे मेहनत करते हैं। मकई पैदा करते हैं। गाय-बैलों की सेवा करते हैं। घी, दूध खाते है। भेड़ें चराते हैं। ऊन उतारते हैं। सूत कातते हैं और ऊनी कपड़ा बनाते हैं। इनका बाहर से कोई ताल्लुक नहीं है। परिंदे उड़ते हैं। सूरज उगता है। यह सारा मंजर ये खेतों में खड़े देखते हैं और मिलकर साथ-साथ गाना गाते हैं।

मैंने उस साथी से कहा कि तुमने जो बात कही है, उससे हालत कुछ दूसरी ही है। जरा उनके नजदीक जाओ तो पता चलेगा कि ये तेल, कपड़ा आदि सारी चीजें बाहर से खरीदते हैं। खरीदने के लिए पैसा चाहिए तो घी, मक्खन वगैरह बेचते हैं। शहरवाले जिस भाव में चाहें, उसी भाव में खरीदते हैं और उन्हें बेचना ही पड़ता है। शहरवाले इनको ठगते हैं। ये शहरवालों से पैसा लाते हैं, फिर उसे शराब, बीड़ी आदि में खर्च करते हैं। इनमें नशाखोरी और आलस्य के दोष हैं। इसी कारण ये झगड़ते हैं, फिर झगड़े मिटाने के लिए कोर्ट की पनाह लेते हैं और शहर के गुलाम बन जाते हैं। इनके पास शादी के लिए पैसा नहीं होता तो ये साहूकार से लेते हैं। साहूकार सूद माँगता है। ये सूद देते हैं और फिर मूल धन चुकाते-चुकाते इनकी जिंदगी बीत जाती है।

इसके अलावा इनको जंगली जानवरों से भी मुकाबला करना पड़ता है। और भी कितनी ही बातें हैं। इन देहातवालों की यह चाह होती है कि हमारे लड़के पढ़ें-लिखें, ताकि उन्हें हमारे जैसी मेहनत न करनी पड़े। लेकिन इन्हें यह समझ लेना होगा कि ये बच्चे पढ़ जायँगे तो जंगल में नहीं रहेंगे। देहात छोड़कर शहर में चले जायँगे।

भलाई का रास्ता

यहाँ एक पढ़ा-लिखा भाई बैठा है। उसके हाथ में घड़ी है। आजकल ठीक से इस्तेमाल करना आये या न आये, फिर भी हरएक के पास घड़ी होती ही है। कहीं भी जाना हो तो घड़ी में टाइम देखते हैं। चार बजकर पचास मिनट हुए, पर इन जंगलवालों को क्या पता कि चार कैसे बजते हैं और पचीस मिनिट के मानी क्या हैं? ये तो सूरज देखकर काम करते हैं। इसलिए अब ये सच्चे दिल से अल्लाह को याद करें, एक-दूसरे पर प्यार करें, मिल-जुलकर रहें और यह मेरी गाय, यह मेरा खेत ऐसे मेरा-मेरा न करें तो ये लोग सुखी होंगे। मेरा और तेरा यह तफरका मिटना चाहिए। यह घर हमारा है, यह खेत हमारा है, यह गाँव हमारा है, ऐसा कहना चाहिए और मिलकर रहना चाहिए।

इस जमाने में शख्सी मालकियत रखने से ये लोग साहूकार के पंजे से नहीं छूट सकेंगे। शेर का मुकाबला करने लिए जंगल में १०, ५ गायें इकट्ठा होती है। वे इकट्ठा होकर ही सामना कर सकती है, यह अक्ल जो जानवर में है, उतनी भी अक्ल अब आदमी में नहीं होगी तो ये गाँव कैसे टिकेंगे। अपने बचाव के लिए, अपनी तरक्की के लिए और गाँव की भलाई के लिए आप एक बनो और नेक बनो, यही समझाते हुए हम आठ साल से घूम रहे हैं।

हमारी बात सुनने के लिए आप दूर-दूर के जंगल से आये हैं। मेरा खयाल था कि आज इस जगह, जहाँ कि कोई बस्ती नहीं है, बारिश में कोई नहीं आयेगा। लेकिन फिर भी आप आये बच्चे और बुढ़े भी आये। सिर्फ बहनें नहीं आयीं।

[एक भाई ने बताया कि वे माल-मवेशी की रखवाली कर रही हैं। यह सुन लेने के बाद विनोबाजी ने लोगों से एक भजन गाने के लिए कहा। "सियाराम भजो, राधेश्याम भजो। चाहे सुबह भजो, चाहे शाम भजो।" सभीने यह भजन गाया तो फिर प्रवचन प्रारंभ करते हुए विनोबाजी बोले] आप इसी तरह नाम जपते चलो और काम करते चलो।

आज भगवान कृष्ण का जन्मदिन है। बड़ा ही शुभ दिन है। आज के दिन आप कसम खाइये कि अब हम आगे कभी (१) झगड़ा नहीं करेंगे। (२) झूठ नहीं बोलेंगे (३) नशाखोरी नहीं करेंगे और (४) खुद मेहनत करके खायेंगे। ◆◆◆

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

दुमाना (जम्मू) १२-६-'५९

मेरी माँग पूरी करने से ही एक बुनियादी इन्कलाब होगा

अभी आपने मौन रखा, सब लोग भगवान के चिन्तन में डूब गये तो हम सब एक हो गये। अलग-अलग मजहब होने के बावजूद यहाँ सारे लोग भगवान के भजन में इकट्ठा बैठें तो कुल लोगों की एक जमात हो गयी, अब हम एक-दूसरे पर प्यार करेंगे और एक-दूसरे को मदद देंगे।

शान्ति-सैनिक क्या करेंगे ?

आठ साल पदयात्रा करके हिंदुस्तान का बहुत सारा हिस्सा घूमकर हम जम्मू-कश्मीर में आये हैं। यहाँपर तीन हफ्ते से हमारी यात्रा चल रही है। हमने देखा कि यहाँके लोग बहुत प्यार करते हैं, यहाँपर शांति-सेना के लिए सेवकों की माँग की तो कइयों ने नाम दिये, अब वे किसी प्रकार का पार्टी भेद, जाति भेद, धर्मभेद नहीं मानेंगे, सबके पास जायेंगे और सबकी खिदमत करेंगे। हरएक के सुख-दुःख जानने की कोशिश करेंगे। जो मदद दिलवा सकते हैं, दिलवाने की कोशिश करेंगे। गाँव में सफाई करेंगे, कहीं कोई बीमार हो तो उसकी सेवा करेंगे, कहीं दंगा-फसाद हो गया तो बीच में पड़कर मार खायेंगे और लोगों को शांति की बात समझायेंगे। ऐसे सेवकों की हमने माँग की तो अब तक साढ़े पाँच सौ से ज्यादा नाम मिले। जम्मू शहर में तो पचास बहनों ने नाम दिये, जिससे मैं ताज्जुब में पड़ गया। जम्मू में इतनी बहनें आगे आती हैं तो वह समाज तरक्की करेगा, ऊँचा बढ़ेगा। भगवान की यही इच्छा है, इसीलिए भगवान लोगों को बुद्धि देता हैं कि बाबा का काम करो, अब हमें इन सब लोगों से काम लेना होगा।

हमारा मक़सद

यहाँपर सरकार ने एक सौ अस्सी कनाल का सीलिंग बनाया है। जिसके पास उससे ज्यादा जमीन थी, वह उससे लेकर मुजारों में बाँट दी है। अब यहाँ जो दान मिल रहा है, वह एक सौ अस्सी कनाल के अन्दर का मिल रहा है, अब तक सैकड़ों दानपत्र मिले हैं। यह दान दिखा रहा है कि लोगों के दिल खुल रहे हैं। भगवान का संदेश लोगों को प्रिय हो रहा है। यहाँ कुछ संपत्तिदान भी मिल रहा है।

इस तरह अपने पास जो कुछ है, उसमें से थोड़ा समाज के लिए देना है, ऐसा जज्बा लोगों में पैदा होता है तो सारा समाज ऊपर चढ़ता है। हम एक-दूसरे पर प्यार करते है तो समाज मजबूत बनता है और नफरत करते हैं तो समाज की ताकत टूटती है। मेरे पास पाँच सेर ताकत है और आपके पास तीन सेर है, अगर हम दोनों मिलते हैं, तो हमारी आठ सेर ताकत बन जाती है। अगर हम नहीं मिलते और एक-दूसरे के खिलाफ खड़े होते हैं तो समाज को सिर्फ तीन सेर ताकत का ही फायदा मिलता है। जब ताकतें जुड़ती हैं, तब ताकत बढ़ती है। अपने देश में ताकतें टूटेंगी तो देश का काम नहीं बनेगा। इस देश में करोड़ों लोग रहते हैं। भगवान ने हरएक को दो हाथ दिये हैं। ये सारे हाथ जुड़ जायँगे तो कितनी ताकत बनेगी! यही बात समझाने के लिए हम आठ साल से घूम रहे हैं। उम्मीद करते हैं कि कश्मीर में भी यह काम चलेगा।

हमारे पास वही लोग आते हैं, जो अपना-अपना दुःख और दुश्वारियाँ सुनाते हैं। हरिजन, शरणार्थी, जमीनवाले, बेजमीन, मुजारे सब अपना-अपना दुःख हमारे सामने रखते हैं। हम सबसे कहते हैं कि आप लोग ऐसे अलग-अलग टुकड़े करके क्यों सोचते हैं? हमें सबके बारे में सोचना चाहिए। हम मिल जायँ, एक-दूसरे पर प्यार करें, सबके दुःख के बारे में सोचें तो उसके खिलाफ लड़ सकेंगे। जो गाँव एक बनेगा, वह सरकार से भी इमदाद हासिल करेगा। जहाँ लोग अलग-अलग रहेंगे, वहाँ कौन किसकी सुनेगा। अवाम की कोई ताकत नहीं बनेगी। इसीलिए हम कहते हैं कि छोटा हो या बड़ा, हरएक को बेजमीनों के वास्ते थोड़ा-थोड़ा दान देना चाहिए। देश को स्वराज्य मिला है लेकिन गाँव को अभी तक नहीं मिला है। गाँव में स्वराज्य तब आयेगा, जब गाँव के लोग एक होंगे। जमीन की मिलकियत मिटाकर गाँव का एक कुनबा बनायेंगे। आप अपने गाँव का मंसूबा खुद बनायेंगे।

सर्वोदय-मंडल

मैं आपको एक खुशखबर सुनाना चाहता हूँ। वह यह कि मैं यहाँ खिदमत के लिए एक सर्वोदय-मंडल बना रहा हूँ। उसके लिए मनुष्यों को जुटा रहा हूँ। उसमें कुछ समय लगेगा। अभी गांधी-सेवा-सदन यह काम करेगा। आज एक पति-पत्नी ने इस काम को उठाया है। वे सर्वोदय-मंडल की तरफ से यहाँपर आपकी सेवा का काम करेंगे। जिन्होंने शान्ति-सेना में नाम दिया है, उनके पास पहुँचेंगे और उनसे काम लेंगे। घर-घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना करेंगे। जम्मू में सर्वोदय काकाम करने की जिम्मेवारी हमने उसपर डाली है। सर्वोदय-मंडल जो बनेगा, उसका यह आरम्भ है। अब तक हमें जो संपत्तिदान मिला है, उसे हम गांधी-सेवा-सदन के हाथ में सौंपेंगे।

हम चाहते हैं कि हर कोई दान दे। यहाँपर ऐसा एक भी अभागा न रहे, जिसने दान न दिया हो। जिसके पास जमीन है, वह जमीन दान दे, जिसके पास संपत्ति है, वह संपत्ति का दान दे, जिसके पास दोनों नहीं है लेकिन मेहनत करने की ताकत है वह श्रमदान दे। जो अपना वक्त इस काम में दे सकते हैं, वक्त का दान दें, शांतिसेना में नाम दें, यह मेरी माँग है। आप सब लोग इस माँग को पूरा करेंगे तो मुझे उम्मीद है कि जम्मू में प्रेम के तरीके से एक बुनियादी इन्कलाब होगा, जिससे सारा समाज ऊपर उठेगा। ◆◆◆

अनुक्रम

१. क्रांति के लिए विचार और प्यार की ताकत बढ़ायें
सुजानपुर २१ सितंबर '५९ पृष्ठ ७३९
२. कृष्ण जयन्ती मनाने का सही तरीका
डीगडोल २६ अक्टूबर '५९ ,, ७४१
३. मेरी माँग पूरी करने से ही एक बुनियादी इन्कलाब होगा
दुमाना १२ जून '५९ ,, ७४२.

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in